REET 2025
LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
हिंदी
क्रिया
LIVE
22-01-2025 06:00 PM

क्रिया

- रचना / कर्म के आधार पर
  - अकर्मक
  - सकर्मक
- प्रयोग के आधार पर
  - संयुक्त
  - नामधातु
  - प्रेरणार्थक
  - पूर्वकालिक
  - सहायक
  - कृदंत
  - सामान्य
  - सजातीय

परिभाषा ⇒ जिस शब्द से किसी कार्य का करना या होना पाया जाता है उसे क्रिया कहते हैं।
क्रिया विकारी शब्द होता है।

उदा॰
पढ़ना - पढ़ + ना
खेलना - खेल + ना
दौड़ना - दौड़ + ना
हँसना - हँस + ना
चलना - चल + ना

धातु – जिस मूल शब्द से क्रिया बनती है उसे धातु कहते है। अथवा क्रिया के मूल रूप को धातु कहते है। धातु मूल अक्षर है जिनमें प्रत्यय लगाकर क्रियाओं का निर्माण किया जाता है। **इसके दो भेद होते है।**

(i). मूल धातु – मूल धातु किसी अन्य शब्द पर निर्भर नहीं होती अर्थात स्वतंत्र होती है।

जैसे – पढ़, लिख, खा, पी, देख आदि। इन्हीं से पढ़ता है, लिखता है, खाता है, पीता है आदि क्रियाएँ बनती है।

(ii). यौगिक धातु – दो या दो से अधिक धातुओं के संयोग से यौगिक क्रिया बनती है।

जैसे – उठना – बैठना, रोना – धोना, चलना – फिरना, चल देना, रो पड़ना आदि ।

* संश्लिष्ट विभक्ति ⇒ सर्वनाम से चिपकाकर विभक्ति का लिखना संश्लिष्ट विभक्ति कहलाती है।

↳ सर्वनाम

उसने खाना खाया।

इससे दूर रहना।

उसके पास मत जाओ।

* विश्लिष्ट विभक्ति ⇒ संज्ञा के साथ हो परन्तु विभक्ति अलग हो उसे विश्लिष्ट विभक्ति कहते है।

↓ विभिन्न

हरीश ने खाना खाया।

मोहन के पास पैसे है।

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद – 2

1. अकर्मक क्रिया - जिन क्रियाओं के कार्य का फल कर्ता में ही रहता है। उसे अकर्मक क्रिया कहते है।

क्रिया से पहले क्या लगाने पर उत्तर नहीं मिलता।

- शिशु सो रहा है।
- कुछ बालक हंस रहे थे।
- पक्षी उड़ता है।
- मीरा जोर से हंसी ।
- सांप रेंगता है।
- चिड़ियाँ आकाश में उड़ती है।
- राजेश दौड़ता है।
- बच्चा बिस्तर पर सोता है।
- मेघनाथ चिल्लाता है।
- वे सो रहे है।
- पक्षी आकाश में उड़ते है।
- कुत्ता भोंकता है।
- अरुण टहलता है।

2. सकर्मक क्रिया - जिस क्रिया का प्रभाव कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है। उसे सकर्मक क्रिया कहते है।

(साथ)

इसमें क्रिया से पहले क्या लगाकर उत्तर मिल जाता है।

- शैली पुस्तक पढ़ रही है।
- रीना खाना खा रही है।
- विकास ने खिलौना खरीदा।
- सविता फल खाती है।
- अध्यापक ने लड़के को पीटा।
- भवंरा फूलों का रस पीता है।
- गीता फूल तोड़ती है।

सीता गीत गाती है।

राधा मूर्ति बनाती है।

भावना कहानी पढ़ती है।

मोहन फुटबॉल खेलता है।

पुलिस ने चोर को पीटा।

(1) एककर्मक क्रिया - जिस सकर्मक क्रियाओं में केवल एक ही कर्म होता है, वे एककर्मक क्रिया कहलाती है।

- नौकरानी झाड़ू लगा रही है।
- आशा गाना गा रही है।
- रवि फिल्म देख रहा है।
- प्रदीप खाना खाता है।

(2) **द्विकर्मक क्रिया** – जिन सकर्मक क्रियाओं में एक साथ दो कर्म होते हैं, वे द्विकर्मक क्रिया कहलाते है।

- श्याम ने राधा को रुपये दिये।
- अध्यापक ने छात्रों को हिन्दी पढ़ाई।
- मीरा अपने भाई के साथ फिल्म देख रही है।

- राजा ने ब्राह्मण को दान दिया।
- राम लक्ष्मण को गणित सिखाता है।
- छात्र ने अध्यापिका को कॉपी दिखाई।
- हमने मोहन से मकान खरीदा।
- श्याम ने राम को थप्पड़ मार दिया।

प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद

1. संयुक्त क्रिया - जब कोई क्रिया दो क्रियाओं के संयोग से निर्मित होती है। उसे संयुक्त क्रिया कहते है।

- वह खाने लगा।
- मैंने किताब पढ़ ली।
- माताजी ने प्रसाद बांट दिया।
- वह पेड़ से कूद पड़ा।
- चिड़ियाँ उड़ा करती है।
- वर्षा होने लगी।
- राम सामान को ले जाएगा।
- मुझे पढ़ने दो।

घंटी बज गई।

अर्थ के आधार पर संयुक्त क्रिया के 11 भेद होते है –

i. **आरम्भबोधक** – इससे क्रिया के आरंभ होने का बोध होता है।
जैस – वह बैठे-बैठे सोने लगा। , लक्ष्मण खेलने लगा।

ii. **समाप्ति बोधक** – इससे क्रिया के सम्पन्न होने का बोध होता है।
जैसे – राधा खा चुकी है। , छात्र कक्षा में जा चुके है।

iii. **अवकाश बोधक** – जहाँ कार्य को सम्पन्न करने में अन्तराल (अवकाश) का बोध हो।
जैसे – माला सो न पायी। , लक्ष्मण युद्ध को नही जीत पाया।

iv. **अनुमति बोधक** – इससे कार्य किये जाने की अनुमति दिये जाने का बोध होता है। जैसे – उसे जाने दो। , राधा को बोलने दो।

v. **नित्यता बोधक** – इससे कार्य की निरंतरता का बोध होता है।
जैसे – नदी बहती रहती है। , हवा चल रही है।

vi. **आवश्यकता बोधक** – इससे कार्य की आवश्यकता का बोध होता है।
जैसे – मुझे रविवार को भी विद्यालय जाना पड़ता है।, मोहन को इस काम को जल्दी करना चाहिए।

vii. **निश्चय बोधक** – इससे क्रिया की निश्चयता का बोध होता है।
जैसे – तुम देर करोगे तो मैं चलता बनूँगा। ,

viii. **इच्छा बोधक** – इससे कार्य करने की इच्छा का बोध होता है।

जैसे – अब मैं सोना चाहता हूँ। , वह घर जाना चाहता है।

ix. **अभ्यास बोधक** – इससे क्रिया करने के अभ्यास का बोध होता है।

जैसे – वह पढ़ता रहता है। , गणेश खेला करता है।

x. **शक्ति बोधक** – इसस क्रिया करने की शक्ति के भाव का पता चलता है। जैसे- राम चल सकता है। , सीता बोल सकती है। , मैं भी निबंध लिख सकता हूँ।

xi. **पुनरुक्त बोधक** – जब दो समर्थक और समान ध्वनि वाली क्रियाओं का योग बनता है, तब उसे पुनरुक्त बोधक कहते है।

जैसे – राम पढ़ाई लिखाई करता है।

सीता विद्यालय प्रायः आया जाया करती है।

2. नामधातु क्रिया - संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों में क्रिया जोड़ने से नामधातु क्रिया बनती है।

जैसे -

हाथ से हथियाना
शर्म से शर्माना
अपना से अपनाना
गर्म से गर्माना
बात से बतियाना
चिकना से चिकनाना

लाज से लजियाना
झूठ से झूठलाना
लोभ से लुभाना
तोतला से तुतलाना
लाठी से लठियाना
धिक्कार से धिक्कारना

3. प्रेरणार्थक क्रिया - इसमे कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते है।

मूल धातु	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
उठ	उठाना	उठवाना
गिर	गिराना	गिरवाना
कट	काटना	कटवाना
सुन	सुनाना	सुनवाना
चल	चलाना	चलवाना
जागना	जगाना	जगवाना

जीतना	जिताना	जितवाना
बोलना	बुलाना	बुलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
सीना	सिलाना	सिलवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया – क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता स्वयं भी कार्य में सम्मिलित होता हुआ कार्य करने की प्रेरणा देता है। उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते है।

- वह सबको भजन सुनाता है।
- माँ बच्चे को खाना खिलाती है।
- महेश बच्चों को रुलाता है।
- गीता बच्चों को हिन्दी पढ़ाती है।
- राम सभी को कविता सुनाता है।
- मोहन बच्चों को पानी पिलाता है।

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया – क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरों को कार्य करने की प्रेरणा देता है से द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते है।

- मोहन गीता से पत्र लिखवाता है।
- मालकिन नौकरानी से बर्तन साफ करवाती है।
- वह अध्यापक से बेटी को गीता पढ़वाता है।
- हम कुली से बोझ उठवाते है।
- महेश नाई से बाल कटवाता है।
- पिता जी अपनी कार मैकेनिक से ठीक करवाते है।

4. पूर्वकालिक क्रिया – जब कर्ता एक क्रिया को समाप्त कर दूसरी क्रिया करना प्रारम्भ करता है। तब पहली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

(पूर्व → पहले, काल → समय में)

- राम भोजन करके सो गया।
- मीना रोकर चुप हो गई।
- बच्चा दूध पीते ही सो गया।
- राकेश पढ़कर टी.वी. देखेगा।
- मैं अभी सोकर उठा हूँ।
- वह अख़बार पढ़कर नहाने गया।
- सीमा खेलकर थक गई।
- मीना रोकर चुप हो गई।

वंदना ने कविता पढ़कर सुनाई।

रेखा सबसे मिलकर अमरावती गई।

5. सहायक क्रिया – यह मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होकर अर्थ को स्पष्ट एवं पूर्ण करने में सहायता प्रदान करती है।

- मैं घर जाता हूँ।
- वे हँस रहे थे।
- मैं खेल रहा हूँ।
- हम देख रहे थे।
- वह खा चुका था।

6. कृदंत क्रिया – जब मूल धातु ना प्रत्यय को छोड़कर कोई अन्य प्रत्यय प्रयोग होता है। उसे कृदंत क्रिया कहते हैं।

~~पढ़ने~~

→ पढ़ + (कर)

पढ़ेगा = (एगा)

- चलेगा – एगा
- खेलेगा – एगा
- दौड़ + कर = दौड़कर
- चले – ए
- चलकर – कर

लिख + ता = लिखता

लिख + कर = लिखकर

7. सामान्य क्रिया – जब क्रिया को पूरा करने के लिए केवल एक पद की आवश्यकता हो।

- राधा गई
- मोहन चलो
- अमन आया
- रीना नाची

रीटा जागी

विशाल नहाया

अनुपमा भागी

8. सजातीय क्रिया - जब एक ही क्रिया पद को दो रूपों में लिखा जाए।

समान जाति की क्रिया

- वह बहुत अच्छी लिखाई लिख रही है।
- बाबर ने बहुत लड़ाइयाँ लड़ी।
- हमने बहुत ऊँची चढ़ाई चढ़ी।
- भारत ने लड़ाई लड़ी।
- **अनुकरणात्मक क्रिया** – हिनहिनाना, खटखटाना, फड़फडाना, झनझनाना, मिनमिनाना, भिनभिनाना इत्यादि।